वर्ष :: 33 अंक : 43
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

प्रकाशन का 33 वां वर्ष

/mithilavarnan

मिथिला वर्णन

स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका

अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान

14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: रविवार, 23 जुलाई, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

अयोध्या में पांच वर्ष के बाल रूप में विराजमान होंगे श्री रामलला

>> अगले साल मकर संक्रांति के बाद होगी प्राण-प्रतिष्ठा

>> तीन विशेष पत्थरों पर काम कर रहे तीन कारीगर

>> इस साल अक्टूबर तक पूरा हो जाएगा प्रतिमा-निर्माण

>> राम के जीवन से जुड़े सभी पात्रों की होंगी मूर्तियां

अनछुए पहलू- 3 : श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने किया खुलासा

वर्णन EXCLUSIVE

अयोध्या से लौटकर
विजय कुमार झा

बोकारो : साढ़े चार सौ वर्षों के अथक संघर्ष के बाद अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण युद्धस्तर पर चल रहा है। मूर्ति, मंदिर की नक्काशी, आसपास के पार्श्व मंदिर आदि का काम जोरों पर चल रहा है। परंतु, शायद यह बहुत कम लोग जानते होंगे कि मंदिर में प्रभु श्रीराम पांच वर्ष के बालरूप में विराजमान होंगे। यह खुलासा किया श्रीराम जन्मभूमि ट्रस्ट, अयोध्या के महासचिव चंपत राय ने। अयोध्या के कारसेवकपुरम में निखिल मंत्र विज्ञान (अंतरराष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार) द्वारा आयोजित एक वृहद कार्यक्रम में उन्होंने ये बातें कहीं। गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली और हजारों साधक-साधिकाओं के सामने उन्होंने मंदिर की पूरी रचना का वर्णन किया।

श्री राय ने कहा कि यह लड़ाई रामलला की थी, इसलिए मंदिर में भगवान के बालक रूप की प्रतिमा रखी जाएगी और बालक जब हैं, तो माता सीताजी नहीं रहेंगी। हनुमान जी भी नहीं रहेंगे, लेकिन वहां 15 स्थानों पर हनुमान हैं। एक स्थान पर हनुमान जी का बहुत सुंदर मंदिर है। 5 वर्ष का बालक, ऐसी कल्पना रामजी की है। 5 वर्ष के बालक का जो वर्णन वाल्मीकि रामायण में आया है, उसकी कल्पना है। उस बालक के पत्थर की प्रतिमाएं बनाई जा रही हैं। बालक की कोमलता कैसी हो, उसकी आंखें कैसी हों, कपोल कैसे हों, उसी कल्पना पर प्रतिमा बननी शुरू हो गई है। अयोध्या में तीन कारीगरों को तीन प्रकार का पत्थर दिया गया है। तीनों कारीगरों ने अपनी-अपनी पसंद का पत्थर रखा है और वो मूर्ति बना रहे हैं। यह काम शुरू हो गया है, जो अक्टूबर तक पूरा हो जाएगा। उन्होंने कहा- हमारी इच्छा है कि भूतल के गर्भगृह में भगवान का जो बालक रूप होगा, उसकी प्राण प्रतिष्ठा 15 जनवरी 2024 (मकर संक्रांति) के दिन से लेकर गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2024 के बीच हो जाय। 15 जनवरी से 24 जनवरी के बीच इसकी प्राण प्रतिष्ठा हो जाएगी। प्राण-प्रतिष्ठा पूरी हुई, तो दर्शन प्रारंभ हो जाएगा। ऊपर मंदिर का निर्माण चलता रहेगा। दो मंजिल और बननी है। उसे बनने में और एक साल लगेगा। उन्होंने कहा कि अगर हम सच्चाई पर है तो हमारी जीत 500 साल के बाद भी हुई। अगर हम राम का काम कर रहे हैं और राम ही हृदय में है, तो विजय तय है।

बिजली-पानी सहित कई मायनों में पूर्ण आत्मनिर्भर होगा मंदिर : चंपत राय के मुताबिक, कल्पना है कि 50 हजार लोग रोजाना मंदिर आया करेंगे। 20 से 25 हजार तो **(शेष पेज- 7 पर)**

महर्षि वाल्मीकि से लेकर शबरी और जटायु तक को भी मिलेगा स्थान

राम मंदिर के लिए एक और कल्पना है। राम के जीवन में जिनका बहुत महत्व है या राम की कथा सुनेंगे, तो जिनका भी वर्णन सुनेंगे, वहां उन सभी को सम्मान दिया जाएगा। महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ और महर्षि विश्वामित्र। जब राम-रावण युद्ध हुआ और बार-बार प्रयत्न के बाद भी जब रावण नहीं मरा, तो महर्षि अगस्त आए। उन्होंने राम को मंत्र दिया, आदित्य हृदय। उस मंत्र का पाठ करने पर राम जीत गए, तो मंदिर में महर्षि अगस्त का भी स्थान बनेगा। तीन पात्र और हैं- शबरी, ऋषि पत्नी अहिल्या और निषाद राज केवट। सबसे अंत में राम का संबंध आया है जटायु से, सो एक स्थान पर जटायु का भी बनाया जा रहा है। इन सभी का भी मंदिर बनेगा और यही संपूर्ण राम मंदिर की कल्पना है।

भगवान सूर्यवंशी, इसलिए दोपहर 12 बजे तक सूर्य की किरणें ललाट को करेगी प्रकाशित

मंदिर में एक व्यवस्था और है। रामनवमी को भगवान राम का जन्म हुआ दोपहर को 12 बजे। भगवान सूर्यवंशी हैं, तो एक ऐसी व्यवस्था की गई है कि दोपहर को 12 बजने तक भगवान सूर्य की किरणें भगवान राम के ललाट को प्रकाशित करेंगी। अभी सभी वैज्ञानिकों का काम चल रहा है। उस मंदिर के चारों ओर एक चहारदीवारी बनाई गई है। आयताकार। उसका भी काम चल रहा है। उस चहारदीवारी के चार कोनों पर भी चार मंदिर हैं। एक मंदिर भगवान सूर्य का, दूसरा मंदिर भगवती का, तीसरा गणपति और चौथा मंदिर भगवान शंकर का और भगवान विष्णु तो बीच में बैठे ही हैं श्री राम। एक भुजा लंबी है, उसके बीच में हनुमानजी और दूसरी लंबी भुजा के बीचो-बीच अन्नपूर्णा। अन्नपूर्णा जहां बनेगी, वही भगवान की रसोई बनेगी और उसी से भगवान को भोग लगेगा।

400 वर्षों में नहीं बना ऐसा कोई दूसरा मंदिर

श्री राय ने बताया कि इस मंदिर की नक्काशी जब देखेंगे तो शायद मंत्रमुग्ध हो जाएंगे, ऐसे पत्थरों की यह रचना है। संभवतः उत्तर भारत में 200-400 साल में ऐसी भव्य और विशाल कोई रचना नहीं बनी है। 380 फीट लंबाई, 250 फीट चौड़ाई और जमीन से शिखर 161 फीट, तीन मंजिला, एक-एक मंजिल 20 फीट ऊंची, 392 खंभे। ये सभी इसकी विशालता बताने को काफी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि इस मंदिर पर किसी का नाम नहीं लिखा जाएगा, क्योंकि लाखों लोगों ने इसके लिए अपना जीवन दिया, उनका नाम कौन लिखेगा?

पूरी तरह चट्टानों से बन रहा मंदिर, जंग और नमी का डर नहीं

चंपत राय के अनुसार जो मंदिर आज बन रहा है, वह पूरी तरह से पत्थरों का है। मंदिर में पत्थर में लोहा नहीं रहेंगे। जमीन के नीचे भी लोहा नहीं है, जमीन के ऊपर भी लोहा नहीं है। जमीन के नीचे कंक्रीट है, जमीन के ऊपर कंक्रीट भी नहीं है। जमीन के नीचे कंक्रीट है, ऊपर केवल पत्थर है। नींव ऐसी बनाई गई है कि 15 मीटर मोटी एक पत्थरों की चट्टान जमीन के नीचे ढालकर तैयार की गई है। लोहा नहीं है, इसलिए वह चट्टान हो जाएगा। लोहा होता तो जंग लगने के बाद फट जाता। उस चट्टान के ऊपर यह मंदिर खड़ा है। 21 फीट ऊंची प्लिंथ दी गई है, वह भी ग्रेनाइट के पत्थर से, ताकि जमीन की नमी न सोख पाए, अन्यथा पानी की नमी ऊपर चढ़ती चली जाएगी और 100-200 साल में पत्थर गीला हो जाएगा।

बुजुर्गों के लिए व्हील चेयर और लिफ्ट भी

इस मंदिर में 392 यानी लगभग चार सौ खंभे हैं। भूतल, प्रथम तल, द्वितीय तल। तीन तल हैं। हर तल की ऊंचाई 20 फीट है। बुजुर्गों के चलने के लिए व्हील चेयर की व्यवस्था है। लिफ्ट की भी व्यवस्था है।

- संपादकीय -

शर्मसार होती मानवता

मणिपुर आग में जल रहा है। वहां पिछले 3 मई से दो समुदायों के बीच जारी हिंसा की घटनाएं लगातार बढ़ती ही जा रही हैं। वहां जो कुछ हुआ या हो रहा है, वह बेहद शर्मनाक है। सच कहें तो मणिपुर में नफरत की दीवार इंसानियत और मानवीय रिश्तों को तार-तार कर चुकी है। मानवता पूरी तरह शर्मसार हो चुकी है। पिछले दिनों सोशल मीडिया पर मणिपुर की दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर घुमाने तथा उनके साथ यौन उत्पीड़न का वीडियो वायरल होने के बाद पूरे देश के लोगों में गुस्सा है। इस घटना को लेकर सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश को खुद आगे आकर दखल देना पड़ा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी खुद मणिपुर की घटना पर अपनी पीड़ा व्यक्त कर चुके हैं। मणिपुर खतरनाक दौर से गुजर रहा है। वहां मैतेई और कुकी समुदाय के बीच हिंसा की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। इस हिंसा में अब तक लगभग 130 से अधिक लोग मारे जा चुके हैं और 400 से ज्यादा लोगों के घायल होने की खबर है। हिंसा को रोकने के लिए सेना, अर्द्धसैनिक बलों और पुलिस के संघर्ष के कारण 60,000 से ज्यादा लोगों को अपने घरों से दूसरी जगहों पर जाने के लिए विवश होना पड़ा है। दरअसल, मणिपुर में तीन प्रमुख समुदाय हैं - मैतेई, नगा और कुकी। मैतेई ज्यादातर हिन्दू हैं। नगा-कुकी ईसाई धर्म को मानते हैं और वे अनुसूचित जनजाति वर्ग में आते हैं। मैतेई की आबादी करीब 66% है। राज्य के करीब 10% इलाके में फैली इम्फाल घाटी में मैतेई समुदाय की बहुलता है। नगा-कुकी की आबादी करीब 34 प्रतिशत है। ये लोग राज्य के करीब 90% इलाके में रहते हैं। मैतेई समुदाय की मांग है कि उन्हें भी जनजाति का दर्जा दिया जाए। इस समुदाय ने इसके लिए मणिपुर हाईकोर्ट में याचिका लगाई। उनकी दलील थी कि 1949 में मणिपुर का भारत में विलय हुआ था। उससे पहले उन्हें जनजाति का ही दर्जा मिला हुआ था। इसके बाद हाई कोर्ट ने राज्य सरकार से सिफारिश की कि मैतेई को अनुसूचित जनजाति में शामिल किया जाए। जबकि, नगा-कुकी जनजातियां मैतेई समुदाय को आरक्षण देने के विरोध में हैं। उनका कहना है कि राज्य की 60 में से 40 विधानसभा सीटें पहले से मैतेई बहुल इम्फाल घाटी में हैं। ऐसे में अनुसूचित जनजाति वर्ग में मैतेई को आरक्षण मिलने से उनके अधिकारों का बंटवारा होगा। मणिपुर के 60 विधायकों में से 40 विधायक मैतेई और 20 विधायक नगा-कुकी जनजाति से हैं। ऐसे में कांग्रेस नेताओं का एक वर्ग नगा-कुकी के समर्थन में उतर गया और मैतेई समुदाय को अदालत द्वारा जनजाति का दर्जा दिए जाने के फैसले का विरोध करने लगा। इससे वहां ईसाई धर्म कबूल कर चुके नगा-कुकी समुदायों का मनोबल बढ़ा और वे हिंसात्मक गतिविधियों का सहारा लेकर मैतेई समुदाय पर आक्रमण करने लगे। नगा-कुकी को चीन की ओर से आधुनिक अस्त्र-शस्त्र मुहैया कराये जाने के कारण उनके आगे प्रशासन की बंदूकें भी कमजोर साबित हो रही हैं। उपद्रवी राज्य को अस्थिर करने के लिए सोची-समझी कार्रवाई कर रहे हैं। हालात बेकाबू हो रहे हैं। इसलिए मणिपुर की घटना को हल्के ढंग से नहीं लिया जाना चाहिए। राज्य सरकार के अलावा केन्द्र सरकार को भी समय रहते ठोस रणनीति बनाकर इस समस्या का समाधान करना चाहिए।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

कारगिल विजय - बहादुरी की एक बेमिसाल कहानी

- सतीश कुमार झा
कारगिल युद्ध सेनानी

२६ जुलाई- विजय दिवस विशेष

26 जुलाई, 1999 को मिली कारगिल विजय भारतीय सैनिकों की बहादुरी, रोमांचकारी, विस्मयकारी, हृदयविदारक तथा बेमिसाल कहानी बयां करती है। 24 वर्षों बाद आज भी जेहन में यह ऐतिहासिक विजय स्मृति तरो-ताजा है। वर्ष भर बर्फ में ढंकी ऊंची पहाड़ियों पर इतने लंबे समय तक लड़े गए विश्व के इस प्रथम युद्ध में वीरों ने बर्फ के गोले खाकर, भूखे प्यासे रहकर, घंटों रेंगते हुए आगे बढ़कर, गोलियों से सीना छलनी होने पर भी दुश्मन से निरंतर लोहा लिया तथा कहीं-कहीं घुसपैठियों को मौत के घाट उतारकर ही प्राण त्यागे। इसमें से अनेक सैनिक अपने माता पिता की एकमात्र संतान थे, कुछ अपनी बहनों का अकेला भाई थे, कुछ की शादी में केवल एक सप्ताह शेष था, कुछ की शादी कुछ दिन पूर्व हुई थी। उसकी दुल्हन के हाथों की मेहंदी भी अभी छूटी नहीं थी। मेरी शादी भी लड़ाई के साल भर पहले ही हुई थी। दुश्मनों से लोहा लेने के क्रम में ही मेरी पहली एनिवर्सरी यहीं मनी। लेकिन, ऐसा भी कोई था, जिसका प्रथम नवजात अपने पिता को देखने के लिए घर के द्वार पर टकटकी लगाए था, किंतु चारों ओर प्रतीक्षा होती रही, स्वप्न धूल-धूसरित हो गए, आशाएं निराशा में बदल गईं, जिनकी प्रतीक्षा थी लौटने की, वह या तो लौटे ही नहीं, अथवा लौटे तो शहीद होकर। कमांडो सुरेंद्र सिंह शेखावत, मेजर मरियप्पन, मेजर कमलेश प्रसाद, मेजर विवेक गुप्ता, मेजर राजेश अधिकारी, नायक हरेंद्र सिंह, मेजर मनोज तलवार जैसे कितने ही अभूतपूर्व साहस का परिचय देने वाले तथा अपने वतन के लिए शहीद हो जाने वाले इन सैनिकों की शौर्य गाथा पूरे विश्व के सैनिकों के लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेगी।

विश्व के इतिहास में कारगिल युद्ध दुनिया के सबसे ऊंचे क्षेत्रों में लड़ी गई जंग की घटनाओं में शामिल है, जिसमें पाकिस्तान के 600 से ज्यादा सैनिक मारे गए, जबकि 1500 से अधिक घायल हुए थे। भारतीय सेना के 562 जवान शहीद हुए और 1363 घायल हुए थे। दरअसल, पाकिस्तान ने अपनी सोची-समझी रणनीति के अंतर्गत सितंबर 1998 में सीधे सियाचिन पर आक्रमण कर दिया था, जिसमें वह पूरी तरह से असफल रहा था। भारत विरोध और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निंदा के बाद भी पाक सेना ने घुसपैठियों के रूप में नियंत्रण रेखा के समीपवर्ती स्थानों पर कब्जा जमाने का अभियान जारी रखा। 1 मार्च 1999 को अचानक पकिस्तान ने अपनी गतिविधियों को तेज करते हुए इन क्षेत्रों में स्थित भारतीय चौकियों और बंकरों पर अपना अधिकार कर लिया। जम्मू कश्मीर के लद्दाख सेक्टर स्थित कारगिल द्रास क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना ने 10 मई 1999 को अचानक ही भीषण बमबारी शुरू कर दी। इसके फलस्वरूप भारतीय आयुध भंडार में आग लग गई और आठ भारतीय सैनिक शहीद हो गए। भारत द्वारा विरोध करने के बाद भी पाक का आक्रमण और अधिक तेज हो गया। विवश होकर 26 मई 1999 को भारत को भी कारगिल में खुला युद्ध शुरू करने की घोषणा करनी पड़ी। पूरे भारत में रेड अलर्ट कर दिया गया। भारतीय सेनाा कारगिल की ओर कूच करने लगी। भारतीय तोपों तथा टैंकों का मुहँ कारगिल की ओर मोड़ दिया गया और कारगिल में ऐसा युद्ध शुरू हो गया, जो इतनी ऊंचाइयों पर इतनी भीषण और दुर्गम परिस्थितियों में लड़ा जाने वाला विश्व का प्रथम तथा भीषण युद्ध था। भारत ने पाक को 17 जुलाई तक अपने घुसपैठिए वापस बुलाने की चुनौती देकर अपनी सामरिक कार्यवाही जारी रखी। घुसपैठियों को भारतीय सेना ने जुलाई के अंतिम सप्ताह तक मौत की नींद सुला दी और नियंत्रण रेखा के पार भागने पर विवश कर दिया।

मातृभूमि की रक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, अदम्य साहस, रण कौशल और जान हथेली पर रख युद्ध करने वाले बहादुरों के दम पर लगभग दो माह के छद्म युद्ध में ही भारत ने पाक को अपमानजनक पराजय का मुंह देखने के लिए विवश करते हुए अपनी एक 1-1 इंच भूमि पुनः प्राप्त कर ली। कारगिल युद्ध के दौरान 26 जुलाई 1999 को भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन विजय' को सफलतापूर्वक अंजाम दिया था। 40 किलोमीटर की मारक क्षमता वाला बोफोर्स तोप इस लड़ाई में गेम चेंजर रहा।

कारगिल- तब और अब

करगिल युद्ध के 23 साल बाद अब लाइन ऑफ कंट्रोल पर भारतीय सेना की तैयारियां काफी बदल चुकी हैं। कारगिल एक ऐसी लड़ाई थी, जिसमें भारत को पता ही नहीं चला कि दुश्मन कब सिर पर आ बैठा, लेकिन आज कहानी बिल्कुल अलग है। अब लाइन ऑफ कंट्रोल पर जगह-जगह पर सेना के कैंप हैं। दूसरी अहम बात यह है कि कारगिल युद्ध दौरान भारतीय सेना को सबसे ज्यादा नुकसान पहाड़ की ऊंची चोटी पर बैठे दुश्मन के हमले से उठाना पड़ा था। ऐसे में अब सेना ने ज्यादातर ऊंची चोटियों तक पहुंचने के लिए रास्ते और सड़क बना ली हैं। टाइगर हिल, तोलोलिंग जैसी ऊंची चोटियों पर सेना ने दर्जनों मजबूत पोस्ट कायम कर ली है। आने वाले समय में अग्निवीर योजना के जरिए यकीनन हमारी सेना और सशक्त होगी।

69वें स्थापना दिवस पर विशेष

भारतीय मजदूर संघ- शून्य से शिखर तक

कहते हैं कि मन में सच्ची लगन और कुछ करने का जज्बा हो, तो मुश्किल से मुश्किल राह भी आसान हो जाती है। तमाम झंझावातों का सामना करते हुए आज भारतीय मजदूर संघ ने श्रमिक संगठनों के क्षेत्र में शून्य से शिखर तक का जो सफर तय किया है, वह संघ के एक-एक समर्पित निष्ठावान कार्यकर्ता का निःस्वार्थ भाव से काम करने का फल है। 23 जुलाई 1955 को प्रसिद्ध श्रमिक नेता भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक स्वर्गीय दत्तोपंत ठेंगड़ी के नेतृत्व में संघ की स्थापना भोपाल में की गई थी। अन्य संगठनों- कोयला, इस्पात, बैंक, बीमा, रेल आदि क्षेत्रों में भी इसी की तूती बोलती थी। वर्ष 1989 का समय भारतीय मजदूर संघ के लिए अविस्मरणीय रहा। 1955 से वर्ष 1989 तक 34 वर्षों में ही सभी केंद्रीय श्रम संगठनों को पीछे छोड़ते हुए अपने कार्यों के बल पर पहली बार देश का नंबर एक संगठन बना और अतंरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) का प्रतिनिधित्व मिला।

बीएमएस ने राजनीतिक पार्टी में जुड़े न रहने के बावजूद हमेशा स्वदेशी विचारधारा को अपनाया, साथ ही राष्ट्र, उद्योग और मजदूरहित को सर्वोपरि मानकर अपना जो सफर शुरू किया, उसके बाद फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा और शून्य से शिखर तक पहुंच गया। अपने देश में श्रमिक संगठनों का इतिहास लगभग सैकड़ों वर्ष पुराना है। एटक देश का सबसे पुराना संगठन है। 31 अक्टूबर 1920 को यह गठित हुआ था। इसके बाद 3 मई 1947 को इंटक, 29 दिसंबर 1948 एचएमएस तथा 30 अप्रैल 1949 को यूटीयूसी का गठन हुआ। इन सभी केंद्रीय श्रमिक संगठनों के कई वर्षों बाद प्रभाव में आए भारतीय मजदूर संघ अपनी स्पष्ट नीति के कारण आज शून्य से शिखर तक पहुंचा है। 2007 में केंद्रीय श्रम संगठनों को दोबारा सदस्यता सत्यापन में भी प्रथम स्थान इसे ही मिला। सदस्यता सत्यापन रिपोर्ट के अनुसार भारतीय मजदूर संघ 62,15,797 सदस्यता के साथ प्रथम स्थान पर, इंटक 39,54,012 सदस्य के साथ दूसरे, एटक 34,42,239 के साथ तीसरे, एचएमएस 33,38,491 के साथ चौथे और सीटू 26,78,473 सदस्यों के साथ पांचवें स्थान पर है।

भारतीय मजदूर संघ तीसरी बार सदस्यता सत्यापन में तीन करोड़ बीस हजार से अधिक सदस्यों के साथ प्रथम स्थान पर है, जो देश का नहीं, बल्कि विश्व का सबसे बड़ा संगठन बन गया है, लेकिन अभी तक केंद्र सरकार, श्रम मंत्रालय द्वारा विधिवत घोषणा एवं पत्र जारी नहीं किया गया है।

प्रस्तुति : **रामधारी**
महामंत्री- सह -
केंद्रीय सलाहकार समिति सदस्य
धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ
(बी.एम.एस.), धनबाद।

फिर सुस्त हुआ बोकारो हवाई अड्डे का काम

शिथिलता... उपायुक्त ने जताई नाराजगी, तेजी लाने का दिया सख्त निर्देश; कहा- जल्द करें पत्राचार

संवाददाता
बोकारो : बोकारो से व्यावसायिक हवाई सेवाएं शुरू करने का काम एक बार फिर सुस्त पड़ता दिख रहा है। जिस तेजी से काम होना चाहिए, वह नहीं हो रहा। लिहाजा, इस साल भी बोकारोवासियों का उड़ने का सपना तय समय पर पूरा हो सकेगा या नहीं, यह कहना कठिन है। इसे लेकर जिले के उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने कड़ी नाराजगी जाहिर की है। धीमे कार्यों पर अफसरों को कड़ी हिदायत देते हुए उन्होंने एयरपोर्ट अथॉरिटी के साथ-साथ संबंधित सभी विभागों के प्रतिनिधियों को ऊपरी स्तर पर पत्राचार करने का निर्देश दिया है। समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में एक बैठक आयोजित कर उन्होंने बोकारो एयरपोर्ट का संचालन शुरू करने को लेकर किए जा रहे कार्यों की प्रगति की समीक्षा के दौरान इस पर चर्चा की और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। मौके पर बोकारो विधायक बिरंची नारायण, उप विकास आयुक्त कीर्ति श्री जी., जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी रजनीश कुमार, चास के अनुमंडल पदाधिकारी दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, सिविल सर्जन डा. अभय भूषण प्रसाद, अपर समाहर्ता सादात अनवर, बीएसएल प्रतिनिधि, बोकारो एयरपोर्ट की वरीय प्रबंधक प्रिया कुमारी, नागर विमाननन विभाग रांची के प्रतिनिधि आदि उपस्थित थे।

डीसी श्री चौधरी ने बिंदुवार लंबित एवं प्रगति कार्यों की क्रमवार समीक्षा की। इस दौरान बोकारो एयरपोर्ट के संचालन में किन-किन विभागों द्वारा कौन-कौन से कार्य निष्पादित किए जाने हैं, इस पर चर्चा की। स्वास्थ्य विभाग, पुलिस विभाग एवं अग्निशमन विभाग से संबंधित पदाधिकारियों को कार्य एवं सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर राज्य मुख्यालय/विभाग स्तर से पत्राचार कर ससमय कार्यों को पूरा करने को कहा। वहीं, समीक्षा क्रम में एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एएआई) स्तर से भी कई कार्य लंबित होने एवं धीमी प्रगति होने का मामला सामने आया। डीसी ने बोकारो एयरपोर्ट के वरीय प्रबंधक प्रिया कुमारी को अपने स्तर से भी निदेशालय एवं संबंधित पदाधिकारी स्तर पर पत्राचार कर कार्यों में तेजी लाने का निर्देश दिया। संबंधित पदाधिकारी को एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय निदेशक को भी समिति स्तर से बिंदुवार लंबित और धीमी प्रगति से संबंधित कार्यों में गति लाने को लेकर पत्राचार करने को कहा।

उन्होंने बीएसएल प्रतिनिधि को बोकारो एयरपोर्ट पर मेडिकल टीम, पारा मेडिकल स्टाफ की आवश्यकता, प्रतिनियुक्ति संख्या से संबंधित पत्र, एमओयू का प्रारूप, एबुंलेंस की विशिष्टता से संबंधित पत्र सिविल सर्जन को अविलंब उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। इसके अलावा, पिछले दिनों संसदीय कार्य एवं ग्रामीण विकास मंत्री, झारखंड सरकार आलमगीर आलम की अध्यक्षता में हुई बैठक के बाद प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुपालन की भी डीसी द्वारा समीक्षा की गई।

डीसी ने प्रतिमाह इस समिति की बैठक करने एवं प्रगति कार्य की नियमित निगरानी को लेकर भी सभी संबंधित पदाधिकारियों को जरूरी-निर्देश दिया।

पेड़ और बूचड़खाने हटाने सहित बाकी हैं कई काम

गौरतलब है कि पिछले माह एयरपोर्ट अथॉरिटी की टीम ने बोकारो हवाई अड्डा का जायजा लिया था। टीम ने जल्द बाकी काम पूरा कराने की बात कही थी। किसी भी विमान के उड़ान भरने और उसे लैंड करने में कोई दिक्कत नहीं हो, इसके लिए ऑपरेशन एरिया में कुछ काम बाकी है, जिसे पूरा करने का निर्देश दिया गया था। वहीं जो पेड़ काटे गए हैं, वह अभी बड़े हो रहे हैं, उन्हें पूरी तरह से साफ किया जाना है। अगर पेड़-पौधे रहेंगे तो उसमें पक्षियां आएंगी, जिससे हवाई उड़ान के दौरान विमान से उनके टकराने से यात्रियों की सुरक्षा पर खतरा उत्पन्न हो सकता है, इसलिए उन सभी पेड़ों को हटवाना बहुत जरूरी है। इसके अलावा चहारदीवारी के बाद जितने बूचड़खाने हैं, उन्हें हटवाने की व्यवस्था की जानी है, क्योंकि बूचड़खाने जहां रहते हैं, वहां पक्षियां आती हैं। पक्षी हवाई उड़ान के लिए सबसे बड़ा खतरा साबित हो सकती है। एएआई के रीजनल एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर मनोज गंगल का कहना है कि दुमका से पहले बोकारो में उड़ान सेवा शुरू की जाएगी।

विचार-मंथन सेल चेयरमैन के साथ वेतन पुनरीक्षण व अन्य मुद्दों पर एटक प्रतिनिधियों की वार्ता

एनजेसीएस की बैठक बुलाकर दूर होंगी वेज रिवीजन की विसंगतियां, वार्ता में सहमति

संवाददाता
बोकारो : ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक) प्रतिनिधियों ने सेल चेयरमैन अमरेन्दु प्रकाश के साथ हुई एक बैठक में वेज रिवीजन सहित इस्पात कर्मियों से संबंधित अन्य मुद्दों पर वार्ता की। नई दिल्ली स्थित इस्पात भवन में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के अध्यक्ष अमरेंदु प्रकाश एवं निदेशक (कार्मिक) केके सिंह के साथ हुई इस वार्ता में एआईटीयूसी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और ऑल इंडिया स्टील वर्कर्स फेडरेशन के अध्यक्ष पूर्व सांसद रमेंद्र कुमार, एटक के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और स्टील फेडरेशन के उपाध्यक्ष विद्यासागर गिरि, एआईटीयूसी के उपाध्यक्ष एवं कोयला मजदूर नेता हरिद्वार सिंह शामिल थे। एटक के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विद्यासागर गिरि ने बताया कि वार्ता में इस्पात मजदूरों की समस्या, खासकर वेज रिवीजन का एरियर भुगतान करने एवं ठेका मजदूरों के मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में अमरेन्दु प्रकाश को सेल चेयरमैन को पदभार ग्रहण करने हेतु बधाई भी दी गई।

इस दौरान एटक की ओर से इस्पात उद्योग की राष्ट्रीय सलाहकार समिति (एनजेसीएस) की बैठक यथाशीघ्र बुलाकर फाइनल एग्रीमेंट संपन्न कराने और बकाया भुगतान करने का मुद्दा उठाया गया। ठेका मजदूरों के न्यूनतम वेतन की गारंटी के साथ-साथ गेट पास को हथियार बनाने पर रोक लगाने के साथ ही न्यूनतम वेतन एवं कानूनी सुविधा मांगने पर काम से बैठा देने की स्थिति पर रोक लगाने पर जोर दिया गया। इसके अलावा ठेका मजदूरों को न्यूनतम वेतन भुगतान की गारंटी करने, ठेकेदार बदले और ठेका मजदूर वही रहे जैसे मुद्दों पर विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में बोकारो स्टील से स्थानांतरित कर्मियों को वापस लाने का मुद्दा भी उठाया गया। सेल के आरएमडी के अस्पतालों में चिकित्सकों की कमी दूर करने तथा वहां के मुद्दों पर नियमित संवाद करने के मुद्दे भी उठाए गए।

सेल अध्यक्ष एवं निदेशक कार्मिक ने एनजेसीएस बैठक बुलाने और मुद्दों पर आम सहमति बनाने और समस्या समाधान पर सहमति जताई। सेल अध्यक्ष ने ठेका मजदूरों को न्यूनतम वेतन भुगतान के बाद उसे वापस ले लेने को आपराधिक कृत्य बताया और इसे किसी भी हालत में सुधार करने के लिए प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने ठेकेदार बदले और मजदूर वही रहे और गेट पास को हथियार के रूप में उपयोग नहीं करने पर भी सहमति जताई और इस संदर्भ में अधिकारियों को दिए गए निर्देश की चर्चा करते हुए मिलजुल कर इस बुराई को दूर करने का आश्वासन दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि विभागाध्यक्ष की जानकारी के बिना किसी भी ठेका मजदूरों का गेट पास नहीं रोका जाएगा, जिसका निर्देश दिया जा चुका है। इन मुद्दों पर स्पेसिफिक बैठक करने और प्रबंधन द्वारा उठाए गए कदमों पर संवाद प्रक्रिया जारी रखने पर भी सहमति व्यक्त की गई। लगभग एक घंटे तक चली बैठक में सेल कर्मचारियों के लंबित मुद्दों के निराकरण के साथ सुरक्षा, स्वास्थ्य, अस्पतालों में सुधार, नगर क्षेत्र में नागरिक सुविधाओं के मुद्दे, लीज लाइसेंसधारी के मुद्दे सहित लंबित समस्याओं के निराकरण हेतु पहल करने का भी भरोसा दिया गया। एनजेसीएस की बैठक यथाशीघ्र बुलाने सहित एमओयू के बाद गठित कमेटियों का कार्य निष्पादन यथाशीघ्र करने पर भी सहमति व्यक्त की गई।

कोरोबी मजूमदार बनीं लोक-जवाबदेही ब्यूरो की निदेशक

कहा- महिला अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में उठाएंगे कारगर कदम

संवाददाता
बोकारो : बोकारो की कोरोबी मजूमदार राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं लोक जवाबदेही ब्यूरो (एनएचआरपीएबी) की निदेशक, महिला सेल नियुक्त हुई हैं। श्रीमती

मजूमदार ने नामांकन के लिए एनएचआरपीएबी की चेयरपर्सन शुभानी राज के प्रति आभार व्यक्त किया और ब्यूरो में निदेशक (महिला प्रकोष्ठ) का पदभार संभालते हुए कहा कि महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य के लिए सेवा करने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिल सकता था। उन्होंने कहा कि भारत में महिलाओं के खिलाफ हिंसा घरेलू हिंसा, जाति-आधारित भेदभाव, दहेज से संबंधित मौतें, जादू-टोना, यौन हिंसा, संघर्ष-संबंधी यौन हिंसा, तस्करी, जबरन विवाह और वैवाहिक बलात्कार सहित कई तरीकों से प्रकट होती है। इनमे से कई के लिए तो कड़े कानूनी प्रावधान बनाये गए हैं, पर कइयों के लिए अभी भी या तो पर्याप्त कानूनी ढांचा नहीं है, या बेहद कमजोर है। निदेशक महिला सेल के तौर पर उनकी प्राथमिकता ऐसे मुद्दों पर नीति निर्माताओं, सिविल सोसाइटी, पुलिस, न्यायपालिका और सरकारों के साथ मिलकर उन्हें कानून के दायरे में लाने की होगी, ताकि देश की महिलाओं के मानवाधिकारों की रक्षा सही मायनो में हो सके और उनके जीवन में बुनियादी सुधार लाए जा सकें। उन्होंने कहा महिलाओं के सम्मान, उनके अधिकारों की रक्षा तथा नारी सशक्तिकरण की दिशा में वह हरसंभव कारगर कदम उठाएंगी।

एनएचआरपीएबी की चेयरपर्सन शुभानी राज ने कोरोबी मजूमदार को उनके नए दायित्व के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनके आने से ब्यूरो की महिला अधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता और मजबूत हुई है। उन्हें विश्वास है कि श्रीमती मजूमदार के कार्यकाल में ब्यूरो के प्रयासों से महिलाओं के जीवन में गुणात्मक बदलाव आ सकेंगे। गौरतलब है कि राष्ट्रीय मानवाधिकार और सार्वजनिक जवाबदेही ब्यूरो (एनएचआरपीएबी) भारत सरकार के कानून (आईटीए 1882) के तहत स्थापित एक सिविल संगठन है, जो केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा अभिप्रमाणित और नीति आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त है।

इसका दायित्व भारतीय मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 के तहत मानवाधिकार संरक्षण और संवर्धन के बारे में जागरूकता पैदा करने, अच्छे सार्वजनिक प्रशासन को सुव्यवस्थित करने और पूरे भारत में सामान्य नीति ढांचे और नीति कार्यान्वयन के माध्यम से मानक आचरण सुनिश्चित करने में सार्वजनिक कार्यालयों की सहायता करना है।

पहले बिंदी, अब कलावा

संवेदनहीनता... हाथ में मौली बांधकर आने पर छात्र की पिटाई का मामला गरमाया

बोकारो थर्मल का मामला, विहिप व बजरंग दल ने की शिक्षक पर कार्रवाई की मांग

संवाददाता
बोकारो थर्मल : धनबाद में बिंदी लगाकर आने वाली छात्रा की पिटाई और खुदकुशी का मामला अभी तक ठंडा भी नहीं हुआ कि एक और मिशनरी स्कूल में हिन्दू विद्यार्थी के साथ प्रताड़ना की घटना फिर सामने आई है। घटना बोकारो जिले के बोकारो थर्मल स्थित कार्मेल स्कूल (हिन्दी माध्यम) की है। स्कूल में नौवीं कक्षा के छात्र करण ठाकुर द्वारा कलाई में मौली धागा (कलावा) बांधकर स्कूल आने पर स्कूल के शिक्षक द्वारा ब्लेड से न सिर्फ छात्र की कलाई का मौली धागा काटा गया, बल्कि उसकी पिटाई भी की गयी।

घटना की जानकारी मिलने पर विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल धनबाद के विभाग मंत्री विनय कुशवाहा, बेरमो प्रखंड संयोजक सौरव सिंह, दीपक वर्मा, सनी कुमार ठाकुर, मोहन ठाकुर, मनीष शर्मा छात्र करण ठाकुर के साथ स्कूल पहुंचे। विनय कुशवाहा ने स्कूल की एचएम सिस्टर जॉयस कुल्लू से मामले को लेकर तीखी निंदा करते हुए कहा कि देश में सभी को धार्मिक स्वतंत्रता दी गयी है। इसके बावजूद स्कूल का एक छात्र जो कि पूजा का मौली धागा कलाई में बांधकर स्कूल आता है तो स्कूल के शिक्षक अमित कुमार लकड़ा द्वारा न सिर्फ धागा को ब्लेड से काट दिया जाता है, बल्कि छात्र की पिटाई भी की जाती है।

कहा कि स्कूल में शिक्षकों के द्वारा इस प्रकार की कार्रवाई कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी और इस प्रकार की कार्रवाई किसी धर्म की आस्था पर चोट को दर्शाता है। प्रतिनिधिमंडल ने स्कूल की एचएम से उक्त शिक्षक पर कार्रवाई करने की भी मांग की।

मामले को लेकर स्कूल की एचएम ने कहा कि उन्हें उक्त घटना की जानकारी नहीं है। वे मामले की जानकारी शिक्षक से लेकर ही आगे का कदम उठा सकते हैं। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल से एक दिन की मोहलत की मांग की। विभाग मंत्री ने पुनः स्कूल आने की बात कही है। स्कूल की नौवीं कक्षा का छात्र पेटरवार थाना के खेतको का रहने वाला है।

निजी अस्पतालों की मनमानी को ले आगे आए देव शर्मा

स्वास्थ्य मंत्री से मिल कार्रवाई की मांग, मिला सकारात्मक आश्वासन

संवाददाता
बोकारो : युवा कांग्रेस के प्रदेश महासचिव सह- प्रदेश मीडिया को-आर्डिनेटर देव शर्मा ने चास-बोकारो के निजी अस्पतालों की मनमानी के खिलाफ शनिवार को झारखंड सरकार के स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता से मुलाकात की। श्री शर्मा ने मंत्री को वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए कहा कि चास-बोकारो के कुछ निजी अस्पतालों की मनमानी चरम पर पहुंच गई है। वो इलाज के नाम पर आम जनता से मुंह-मांगे और अनाप-शनाप पैसे की वसूली करते हैं। मानवता का कोई ख्याल नहीं रखते। पैसे कम करने का अनुरोध करने पर पुलिस से झूठे मुकदमे में फंसाने की धमकी देते हैं। कुछ गरीब असहाय लोगों की तो जमीन तक बिकवा देते हैं, लेकिन अफसोस कि हमारे नेतागण मौन बने हुए हैं। कुछ नेताओं को तो निजी अस्पतालों से कमीशन भी आता हैं, जिसके चलते वो चुप्पी बनाए रखते हैं। श्री शर्मा ने मंत्री से मानवीय संवेदना को ताक पर रखने वाले ऐसे निजी अस्पतालों के खिलाफ कार्रवाई करने का आग्रह किया,

ताकि लोगों को राहत मिले और आम जनमानस में कांग्रेस के प्रति विश्वास और बढ़े। मंत्री ने उन्हें इस दिशा में सकारात्मक कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

हरित पहल बोकारो इस्पात नगर और प्लांट परिसर में शुरू हुई अहम मुहिम

सवा लाख पौधे लगाएगा बीएसएल

संवाददाता
बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट के पर्यावरण संरक्षण एवं सस्टेनेबिलिटी विभाग ने सेल/बोकारो स्टील प्लांट में सघन वृक्षारोपण के लिए हरित अभियान शुरू किया। इस अभियान के तहत इस वित्तीय वर्ष में लगभग सवा लाख पौधे लगाए जाने की योजना बनाई गई है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान प्लांट के अंदर 50000 पौधे लगाए जाएंगे। पौधों के जीवित रहने की दर को बढ़ाने के लिए अगले दो वर्षों के दौरान पौधों की उचित देखभाल और बैरिकेडिंग भी की जाएगी। बोकारो स्टील प्लांट ने बोकारो एवं आसपास के क्षेत्रों में 46 लाख पेड़ लगाए हैं और वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान प्लांट और टाउनशिप में 1,20,000 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है।

कोक ओवन और कोयला रसायन विभाग में अधिशासी निदेशक (संकार्य) बीके तिवारी द्वारा वृक्षारोपण अभियान का शुभारंभ किया गया, जहां बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण के माध्यम से दो आम के बगीचे विकसित किए जाएंगे। बोकारो स्टील प्लांट में फैले विभिन्न क्षेत्रों में इसी तरह के सघन वृक्षारोपण की योजना बनाई गई है। इस अवसर पर अधिशासी निदेशक (संकार्य) श्री तिवारी ने वृक्षारोपण के लिए पर्यावरण संरक्षण और सस्टेनेबिलिटी और सी.ओ. एवं सी.सी. विभागों के प्रयासों की सराहना की और सभी को इस मानसून में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया।

उल्लेखनीय है कि बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण न केवल जैव-विविधता में सहायक हैं, बल्कि भूजल के अंदर वर्षा जल के बेहतर प्रवाह में भी मदद करते हैं। सघन वृक्षारोपण कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन में भी मदद करता है और आसपास के क्षेत्रों में वातावरण के तापमान को नियंत्रित करता है। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (अनुरक्षण) शरद गुप्ता, मुख्य महाप्रबंधक (सी.ई.डी.) शालिग्राम सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मेक.) वी.के. सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (सी.ओ.एंड सी.सी.) राकेश कुमार एवं एन.पी. श्रीवास्तव, महाप्रबंधक (पर्यावरण एवं सस्टेनेबिलिटी) उपस्थित थे।

हफ्ते की हलचल

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष पहुंचे

बोकारो : संगठन यात्रा के क्रम में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया अपनी टीम के साथ बोकारो पहुंचे। यहां सेक्टर- 2 स्थित जैन मिलन के तेरापंथ भवन में महासभा के अध्यक्ष श्री सेठिया, आंचलिक प्रभारी मदन मोहन चौरड़िया तथा सभा प्रभारी पारस बोथरा को तिलक लगाकर उनका स्वागत किया। जैन मिलन के अध्यक्ष तथा सभा के कोषाध्यक्ष बजरंग लाल चौरड़िया ने अतिथियों को जैन प्रतीक ध्वज पट पहनाकर उनका स्वागत किया। सभा के अध्यक्ष शांतिलाल जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। पारसनाथ बोथरा ने संगठन यात्रा के महत्व को बताया। तेरापंथ युवक परिषद चास बोकारो के अध्यक्ष सिद्धार्थ चौरड़िया ने संगठन की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। इस क्रम में महिला मंडल की मूल्य के नवनिर्वाचित टीम ने शपथ ग्रहण भी किया। महासभा अध्यक्ष ने नवनियुक्त अध्यक्षा कनक जैन और उनकी टीम को शपथ दिलाई तथा उनके सफल कार्यकाल की मंगलकामना की। चास-बोकारो के मंत्री प्रकाश कोठारी ने विगत वर्ष में किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुनि ज्ञानेंद्र कुमार के सानिध्य में मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम भी सफल बनाया गया। इसमें आसपास के कई श्रावक शामिल हुए। महासभा के अध्यक्ष मनसुख लाल सेठिया ने कहा कि झारखंड राज्य में आपकी सभा प्रभावी है। उन्होंने चास बोकारो तेरापंथी सभा के कार्यों की सराहना करते हुए यहां ज्ञानशाला को पुनः प्रारंभ करने का अनुरोध भी किया। सह-मंत्री सुशील बैद ने कार्यक्रम का संचालन किया। उक्त आशय की जानकारी मीडिया प्रभारी सुरेश बोथरा ने दी।

डॉ. सरिता बनीं गोमिया डिग्री कॉलेज की प्राचार्य

गोमिया : गोमिया स्थित नवनिर्मित गोमिया डिग्री कॉलेज में प्राचार्य पद पर डॉ. सरिता श्रीवास्तव ने पदभार ग्रहण किया। समाजसेवियों ने बुके देकर उनका स्वागत किया। नवपदस्थापित प्राचार्य डॉ. सरिता श्रीवास्तव इससे पूर्व श्रीश्री लक्ष्मी नारायण ट्रस्ट महिला कॉलेज धनबाद में फिजिक्स विभाग की हेड व वाइस प्रिंसिपल थीं। उन्होंने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन को लेकर अपनी कटिबद्धता व्यक्त करते हुए अच्छी व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना अपनी प्राथमिकता बताई। उन्होंने कहा कि इस कॉलेज को झारखंड के प्रीमियर कॉलेजों में शामिल करना ही उनका एकमात्र उद्देश्य रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि पूरी लगन मेहनत के साथ अपने सहयोगी व्याख्याताओं व कर्मचारियों समाज के सहयोग से महाविद्यालय को निरंतर आगे बढ़ाना उनका ध्येय रहेगा, ताकि यहां से बच्चे पढ़-लिखकर उच्च शिक्षा पाकर अच्छे देश के अच्छे नागरिक बन सकें।

नहीं रहे श्यामा माई मंदिर के संरक्षक लक्ष्मण झा, शोक

बोकारो : नगर के सेक्टर- 2डी स्थित बोकारो के सुप्रसिद्ध श्यामा माई मंदिर के संरक्षक तथा बोकारो के प्रतिष्ठित व्यवसायी सह- समाजसेवी लक्ष्मण झा (65) नहीं रहे। हृदयाघात होने पर रांची के पारस अस्पताल में उनका इलाज किया जा रहा था, जहां उन्होंने अपनी अंतिम सांसें लीं। उनके निधन से बोकारो मैथिल समाज एवं व्यवसाय जगत के लोगों में शोक की लहर दौड़ गई है। मैथिली कला मंच, काली पूजा ट्रस्ट के महामंत्री सुनील मोहन ठाकुर ने बताया बीते 2 जुलाई को सीने में दर्द की शिकायत के बाद यहां नया मोड़ स्थित वेलमार्क अस्पताल में उन्हें भर्ती कराया गया था। अस्पताल ने आनन-फानन में उनकी एंजियोप्लास्टी की और दो दिन के बाद उन्हें रिलीज कर दिया। लेकिन, एक सप्ताह के अंदर उन्हें फिर परेशानी हो गई और तबीयत उल्टे और बिगड़ गई। उन्हें पुनः वेलमार्क अस्पताल ले जाया गया, जहां अस्पताल प्रबंधन ने अपने हाथ खड़े कर दिए। वहां के डॉक्टरों ने उन्हें रांची स्थित पारस अस्पताल में रेफर कर अपना पल्ला झाड़ लिया। पारस में भी उनकी तबीयत में सुधार नहीं हुआ और वह चल बसे। स्व. झा अपने पीछे एक पुत्र, दो पुत्रियों एवं पत्नी सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

बास्केटबॉल प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाए अपने दमखम

बोकारो : चिन्मय विद्यालय के क्रीड़ा प्रांगण में 11वीं एवं 12 कक्षा के विद्यार्थियों के लिए अंतर सदन बास्केटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अग्नि सदन एवं वायु सदन के बीच हुए संघर्ष मुकाबले में दोनों टीमों ने शानदार प्रदर्शन किये। अग्नि सदन ने वायु सदन को 19 के मुकाबले 18 से अंकों से हराया। इससे पूर्व खेले गए मैच में अग्नि सदन ने पृथ्वी सदन को 21- 16 से एवं वायु सदन ने जल सदन को 17- 12 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। फाइनल मैच प्रारंभ होने के पूर्व विद्यालय के प्राचार्य सूरज शर्मा ने अग्नि सदन एवं वायु सदन के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया एवं दोनों टीमों को शुभकामनाएं दी। अग्नि सदन के खिलाड़ियों - चेतन प्रकाश, अभिनव, भानु, पवन, कनिष्क, सौरभ एवं कृष ने शानदार तालमेल एवं तकनीक का परिचय देते हुए अपनी टीम को जीत दिलाई। वायु की ओर से आदित्या, अभय, कृष, दिव्यांश, आनंद, अरिन एवं प्रिन्स ने शानदार प्रदर्शन किया। अग्नि सदन के चेतन प्रकाश को उसके शानदार प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द टूनामेंट घोषित किया गया। इस मैच में संजीव सिंह, प्रांजल सैकिया, प्रत्यूष सिंह, ललिता ने निर्णायक की सफल भूमिका निभाई। इस दौरान वरीय शिक्षक हरिहर पांडेय, डॉ गौतम कुमार नाग, देवदीप चक्रवर्ती, निशांत सिंह, प्रवीण कुमार एवं नितेश पांडेय ने उपस्थित होकर खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।

राष्ट्रवादी मुसलमान और भारतीय-दर्शन के साहित्यकार थे आचार्य हाशमी

12वीं पुण्यतिथि पर मंत्रेश्वर झा समेत छह साहित्यसेवियों को दिया गया स्मृति-सम्मान

सैयद असद आजाद की पुस्तक 'मेघ देवता' का लोकार्पण, कवि-गोष्ठी भी

विशेष संवाददाता

पटना : 'बहु-आयामी व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी आचार्य फजलुर्रहमान हाशमी न केवल मैथिली, हिन्दी और ऊर्दू के मनीषी विद्वान और समर्थ साहित्यकार थे, अपितु भारतीय दर्शन से अनुप्राणित एक राष्ट्रवादी मुसलमान थे। उन्हें पाली और संस्कृत का भी गहन ज्ञान था। भारतीय-दर्शन और वैदिक-साहित्य का भी उन्होंने गहरा अध्ययन किया था। इसीलिए उनकी काव्य-रचनाओं में अनेक पौराणिक-प्रसंग प्रमुखता से आए हैं। साहित्यिक मंचों के भी वे कुशल और लोकप्रिय संचालक थे। उन्हें न केवल साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया था, बल्कि उन्हें अकादमी का सदस्य भी बनाया गया था। तीनों भाषाओं में उनके द्वारा रचित 17 ग्रंथ उनके महान साहित्यिक अवदान के परिचायक हैं। वे मैथिली, हिन्दी और ऊर्दू के मनीषियों के बीच समान रूप से आदर पाते रहे।'

यह बातें गुरुवार को, आचार्य हाशमी सांप्रदायिक सौहार्द मंच के सौजन्य से बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में आचार्य हाशमी की 12वीं पुण्यतिथि पर आयोजित स्मृति-सह-सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने कही। उन्होंने कहा कि आज जब संपूर्ण वसुधा में सांप्रदायिक सौहार्द पर ग्रहण लगा हुआ है, आचार्य हाशमी अत्यंत प्रासंगिक हैं और बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन को उनको स्मरण करते हुए गौरव की अनुभूति हो रही है।

इस अवसर पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अवकाश प्राप्त अधिकारी और साहित्यकार पं. मंत्रेश्वर झा को उनकी मैथिली सेवा के लिए, बेगूसराय के वयोवृद्ध साहित्यकार अशांत भोला को उनकी हिन्दी-सेवा के लिए, वरिष्ठ साहित्यकार और पूर्व प्रधानाचार्य

कस्तूरी झा 'कोकिल' को शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान योगदान के लिए, कोलकाता के मशहूर शायर अशरफ याकूबी को उनकी ऊर्दू सेवा के लिए, समाजसेवी सैयद अकील अख़्तर को सांप्रदायिक-सौहार्द में उल्लेखनीय कार्यों के लिए तथा किशोर साहित्यकार सैयद असद आजाद को बाल-साहित्य में योगदान के लिए आचार्य फजलुर्रहमान हाशमी स्मृति-सम्मान से विभूषित किया गया। इस अवसर पर असद आजाद की पुस्तक 'मेघ-देवता' का लोकार्पण भी किया गया। समारोह के उद्घाटन-कर्ता और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. सी पी ठाकुर ने सभी मनीषियों को वंदन-वस्त्र, स्मृति-चिन्ह, प्रशस्ति-पत्र तथा 21 सौ रुपए की सम्मान-राशि देकर सम्मानित किया। अपने उद्गार में डा. ठाकुर ने कहा कि साहित्य में, विशेष कर मैथिली साहित्य में आचार्य हाशमी के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वे सांप्रदायिक सौहार्द के मिसाल थे।

समारोह के मुख्य अतिथि और बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य इम्तियाज अहमद करीमी ने कहा कि एक साहित्यकार का काम पथ-प्रदर्शक का है। आचार्य हाशमी ऐसे ही एक पथ-प्रदर्शक थे, जिन्होंने भटके हुए लोगों का अपने साहित्य से मार्ग-दर्शन किया। मौलाना मजहरूल हक अरबी फारसी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो तौकीर आलम, सम्मेलन के उपाध्यक्ष डा शंकर प्रसाद, सुप्रसिद्ध उपन्यासकार प्रो अली इमाम तथा बच्चा ठाकुर ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन में सम्मनित कविगण बेगूसराय के अशांत भोला तथा कोलकाता के वरिष्ठ शायर अशरफ याकूबी सहित शहंशाह आलम, प्रफुल्ल मिश्र, एहसान शाम, आरपी घायल, शमा कौसर 'शमा', डा शालिनी पाण्डेय, तलत परवीन, शुभ चंद्र सिन्हा, प्रो सुनील कुमार उपाध्याय, जय प्रकाश पुजारी, ई अशोक कुमार, अर्जुन प्रसाद सिंह, बिंदेश्वर प्रसाद गुप्त आदि कवियों और कवयित्रियों ने अपनी काव्य-रचनाओं से समारोह को यादगार बना दिया।

अतिथियों का स्वागत मंच के अध्यक्ष और पत्रिका दूसरा मत के संपादक ए आर आजाद ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया। मंच का संचालन कवि ब्रह्मानन्द पाण्डेय ने किया।

सम्मेलन के अर्थमंत्री प्रो सुशील झा, परवेज आलम, बांके बिहारी साव, चंदा मिश्र, प्रवीर पंकज, डा चंद्रशेखर आजाद, मनोज कुमार उपाध्याय, जनार्दन पाटिल, दिलीप गायकवाड़, मो शादाब मंजर, उर्मिला सिंह, दुःख दमन सिंह आदि प्रबुद्धजन समारोह में उपस्थित थे।

मां ने तुड़वाया सन्तोष का अनशन, कहा-

तू ही जिंदा न रहा, तो कौन लड़ेगा गरीबों की लड़ाई

संवाददाता

देवघर : मां की ममता की हर कहानी दिल छूने वाली होती है। देवघर के युवा नेता सन्तोष पासवान की मां वर्तमान जिला परिषद सदस्य सुशील आशा को अपने बेटे सन्तोष के द्वारा न्याय के लिए 16 दिनों से जारी अनशन का उनकी जान पर बन आना नागवार लगा। लगता भी कैसे, वह मां जो ठहरीं। रिम्स, रांची में इलाजरत संतोष के पास वह देवघर से पहुंचीं। उन्होंने सन्तोष से आग्रह करते हुए कहा- बेटा छोड़ दे अपनी जिद! तू अगर जिंदा नहीं रहा, तो कौन लड़ेगा गरीब-पीड़ितों की लड़ाई? मां ने अपनी कसम देकर उन्हें नारियल पानी पिलाकर उनका अनशन तोड़वाया।

इस मौके पर सुशीला आशा ने कहा कि सन्तोष देवघर विधानसभा का उभरता हुआ नेता है। इस पर गलत आरोप लगाकर उसे जेल भेज दिया है। कहा- मेरा बेटा चट्टान की तरह मजबूत है। वह झूठे आरोपों से डरने वाला नहीं है। इसने देवघर सीओ से न्याय की मांग की, तो झूठे आरोप में फंसा दिया। अगर उनके साथ सन्तोष ने मारपीट की है, तो वहीं कारखाने के बाहर सीसीटीवी लगा हुआ है। उसके फुटेज की जांच करा ले और उसे जारी करे।

भ्रष्ट अफसर को भगाने तक जारी रहेगी लड़ाई

सुशील आशा ने कहा कि उनका बेटा संतोष देवघर की जनता की लड़ाई लड़ रहा है। यह लड़ाई अभी थमी नहीं है। भ्रष्ट अधिकारी को भगाने यह तक जारी रहेगी। माइनिंग हादसे के पीड़ितों को न्याय मिलने तक जंग

जारी रहेगी। जब देवघर की जनता लड़ाई में शामिल है तो फिर भय कैसा? ज्ञात हो कि बीते दिनों जसीडीह इंडस्ट्रियल एरिया के एक कारखाने में झुलसने से दो मजदूरों की मौत हो गई थी तथा अन्य घायल हो गये थे। पीड़ित परिवार को मुआवजा दिलाने के लिए पूर्व जिप उपाध्यक्ष संतोष पासवान ने विरोध प्रदर्शन किया। आरोप है कि उक्त समय ने सन्तोष ने देवघर सीओ के साथ मारपीट की थी, जिसकी लिखित शिकायत पर संतोष को गिरफ्तार किया गया था। पीड़ित परिवार को मुआवजा दिलाने के लिए सन्तोष ने देवघर जेल में ही अनशन करना शुरू कर दिया। हालात बिगड़ने पर पहले सदर अस्पताल और उसके बाद अभी रांची रिम्स में इलाजरत हैं, जहां उनकी मां ने नारियल पानी पिलाकर बेटे का अनशन तोड़वाया।

मुजफ्फरपुर में अपराधी बेलगाम, प्रोपर्टी डीलर समेत तीन की मौत से सनसनी

मुजफ्फरपुर : मुजफ्फरपुर में इन दिनों अपराध बेलगाम है और अपराधियों के हौसले बुलंद। बदमाशों ने बीते दिनों घर में घुसकर प्रॉपर्टी डीलर, उनके तीन बॉडीगार्ड और वकील को गोली मार दी। इस गोलीबारी में प्रॉपर्टी डीलर आशुतोष शाही और उनके दो बॉडीगार्ड की मौत हो गई। इस घटना के बाद पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई। समाचार लिखे जाने तक एक बॉडीगार्ड और वकील का इलाज जारी था। प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रॉपर्टी डीलर आशुतोष शाही अपने 3 बॉडी गार्ड्स के साथ अपने वकील सैयद कासिम हुसैन उर्फ डॉलर के घर गए थे। इसी बीच घर में घुसकर बदमाशों ने पहले कारोबारी पर फायरिंग की, फिर वकील पर गोली चलाई। गोलियों की आवाज सुन बचाने आए तीन बॉडीगार्ड पर भी ताबड़तोड़ फायरिंग की गई। मामला जिले के नगर थाना क्षेत्र का है। बदमाशों ने वकील और दो गार्ड को दो-दो गोली मारी है। एक गार्ड निजामुद्दीन को घसीट-घसीटकर 5 गोली मारी गई है। आशुतोष शाही हत्याकांड की जांच के लिए पुलिस

मिथिला डायरी

की 6 स्पेशल टीम बनाई गई है। कुछ अपराधियों की पहचान की गई है। मौके से 20 खोखे बरामद किए गए हैं। दो बाइक पर आए 4 बदमाश वकील डॉलर का घर नगर थाना क्षेत्र के चंदवारा लकड़ीढाई रोड में मारवाड़ी स्कूल के पास है। आशुतोष शाही वकील के साथ जमीन के कागजात के संबंध में बातचीत कर रहे थे। इसी दौरान दो बाइक पर सवार 4 अपराधी पहुंचे, जिसमें दो अपराधी घर के बाहर से रेकी करने लगे। वहीं, दो अपराधी घर में घुस गए। कमरे में आशुतोष शाही को देखते ही उस पर फायरिंग शुरू कर दी। आशुतोष की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, वकील डॉलर को भी दो गोली लग गई। गोली की आवाज सुनने के बाद बॉडीगार्ड्स ने भी फायरिंग शुरू कर दी, जिसके बाद अपराधियों ने तीनों बॉडीगार्ड्स पर भी फायरिंग शुरू कर दी।

पुरुषोत्तम मास : 18 जुलाई से 16 अगस्त, 2023

सर्वस्व प्रदाता हैं भगवान विष्णु

पुरुषोतम मास अर्थात उत्तम

पुरुषोत्तम का तात्पर्य है, जो पुरुषों में उत्तम हो। शास्त्रों में पुरुष शब्द के अर्थ में लिखा गया है कि वह व्यक्ति, जो इन गुणों से परिपूर्ण हो। शास्त्र के अनुसार उत्तम पुरुष में ये सात गुण होते हैं, इन गुणों से अभिभूत व्यक्ति में मर्यादा एवं समय के अनुसार चलने का सामर्थ्य बल होता है। जिसमें समय के अनुसार अपने आप को ढालने की क्षमता हो, जिसमें वीरोचित भाव हो, जिसमें सब के प्रति प्रेम का भाव हो, जिसमें कामदेव का लावण्य हो, जिसका व्यक्तित्व आकर्षक हो, जिसके व्यक्तित्व में सम्मोहन की शक्ति हो, जिसके व्यक्तित्व में सामर्थ्य भाव हो, जो हर स्थिति में मर्यादित हो।

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

भगवान विष्णु सर्वव्यापक हैं। सारा संसार ही विष्णु का क्षेत्र है। वे नारायण हैं, क्योंकि जल (नार) में निवास करते हैं। विष्णु अकेले देवता हैं, जिनके लिए श्रीमन्नारायण संबोधन कहा जाता है और इस संसार में सारे पुरुष विष्णु का प्रतिनिधित्व करते हैं। सभी श्रीमान विष्णु रूप हैं। उनकी श्री तत्व 'लक्ष्मी' रूपा गृहलक्ष्मी हैं, जिनके साथ युक्त होकर वे अपने जगत का पालन करते हैं।

भगवान विष्णु प्रथम गृहस्थ हैं। वह सन्यासी नहीं है और हैं भी। भगवान विष्णु गृहस्थ लोगों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण से युक्त गृहस्थी का स्वभाव कैसा होना चाहिए।

सर्व प्रचलित है कि विष्णु भगवान के दस अवतार हैं। यह दशावतार हैं- मत्स्य, कच्छप, वाराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि। नारायण (नार) जिनका निवास है, उनके प्रथम अवतार मत्स्य हैं। कश्यप रूप में वे जल एवं थल, दोनों में हैं। वाराह रूप में विष्णु की व्यापकता भूमि में है। नरसिंह रूप में वे शक्ति के वाहन सिंह एवं विष्णु एकाकार हैं। वामन रूप में उनका शरीर छोटा, परशुराम में क्रोध तीव्र एवं और नियंत्रित, राम में वे मर्यादा पुरुषोत्तम एवं श्रीकृष्ण में पूर्ण भगवान बन गए हैं तथा बुद्ध रूप में अनासक्त हैं।

भगवान विष्णु जगत के पालनकर्ता हैं। भगवान विष्णु का स्वरूप शान्त, आनंदमय और कोमल है। भगवान विष्णु शेषनाग पर विराजित होते हुए भी आनंदमय हैं। भगवान विष्णु के इसी स्वरूप के लिए शास्त्रों में लिखा है-

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगं।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

भगवान विष्णु के स्वरूप से स्पष्ट होता है कि कर्म करते हुए, क्रिया करते हुए भी आनंदमय रहा जा सकता है।

जीवन तो निरन्तर कर्तव्य और जिम्मेदारियों का पुंज है। जीवन में पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक दायित्व अहम होते हैं, किन्तु इन दायित्वों को पूरा करने के साथ ही अनेक समस्याओं व परेशानियों का सिलसिला भी चलता रहता है, जो काल रूपी नाग की तरह बेचैनी और चिंताएं पैदा करता है। इनसे कई मौकों पर व्यक्ति टूटकर बिखर भी जाता है।

भगवान विष्णु का शान्त स्वरूप यही कहता है कि बुरे से बुरे वक्त में भी संयम, धीरज के साथ मजबूत दिल और शान्त दिमाग रखकर जिन्दगी की तमाम मुश्किलों पर काबू पाया जा सकता है और ऐसा करने वाला व्यक्ति ही पुरुषों में उत्तम, पुरुषोत्तम कहलाने योग्य है, ऐसा व्यक्ति ही सही मायनों में पुरुषार्थी है।

धरती पर रहने वाले समस्त जीवों को आश्रय प्रदान करने वाले, पालनहार पुरुषोत्तम विष्णु ही हैं। यह सारा संसार ही भगवान विष्णु की शक्ति से संचालित है। विष्णु की उपासना, साधना, पूजन, मंत्र जप करने से मनुष्य का जीवन सरल और सफल हो जाता है। पुरुषोत्तम मास के स्वामी भगवान विष्णु अपने साधकों को श्रेष्ठ, उत्तम, पुरुषोत्तम बनने का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। सभी प्रकार के उपद्रवों को शान्त कर साधकों को धैर्य और चित्त में आनन्द प्रदान करते हैं।

हे भगवान विष्णु! आप लक्ष्मी के साथ सदैव मेरे घर में विराजमान रहें और मुझे जीवन में चतुर्वर्ग- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो। मैं अपने जीवन में अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण कर सकूं।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

सिरदर्द से हैं परेशान, तो अपनाएं ये पांच घरेलू नुस्खे

कई बार हमें धूप, गर्मी, शोर आदि के कारण तेज सिर दर्द की शिकायत हो जाती है, जिससे हम दैनिक दिनचर्या में असहजता महसूस करने लगते हैं। दर्द से जल्दी छुटकारा पाने के लिए हम आमतौर पर डिस्प्रिन या कोई दर्द निवारक दवा लेते हैं। भले ही इनका सेवन करने से हमें दर्द से राहत मिल जाती है, लेकिन दर्द निवारक दवाओं का अधिक सेवन हमारे स्वास्थ्य को कई तरह से नुकसान पहुंचा सकता है। हमारे पास दर्द को दूर करने के लिए घरेलू उपचार का विकल्प है। ये न सिर्फ सेहत को नुकसान पहुंचाए बिना दर्द से राहत दिलाते हैं, बल्कि इन्हें घर पर भी आसानी से बनाया जा सकता है। उन्हें अपनाना ज्यादा कारगर साबित हो सका है। आइए जानते हैं कौन से हैं ये पांच घरेलू नुस्खे-

1. तुलसी : अगर आपको तेज सिरदर्द हो रहा है तो आप तुलसी के पत्तों की मदद से इससे राहत पा सकते हैं। जब भी सिर में दर्द हो तो एक कप पानी में तुलसी के कुछ पत्ते डालकर चाय की तरह उबाल लें। इसमें शहद मिलाकर सेवन करें। आप कुछ ही समय में फर्क महसूस करेंगे।

2. लौंग : लौंग सिर दर्द को कम करने में भी फायदेमंद है। आप कुछ लौंग की कलियों को तवे पर गर्म करें और इन गर्म लौंग की कलियों को रुमाल में बांध लें। अब इस बर्तन को कुछ देर तक सूंघते रहें। ऐसा करने से सिर दर्द में आराम मिलेगा।

3. पानी : कई बार शरीर में पानी की कमी से सिर दर्द की शिकायत हो जाती है। ऐसे में शरीर को हाइड्रेट रखें और खूब पानी का सेवन करें।

4. एक्यूप्रेशर : एक्यूप्रेशर की मदद से भी सिरदर्द से राहत पाई जा सकती है। अपनी दोनों हथेलियों को सामने ले जाएं और एक हाथ से दूसरे हाथ के अंगूठे और तर्जनी के बीच की जगह को हल्के हाथ से मसाज करें। ऐसा 5 मिनट तक करें। आप दर्द से राहत महसूस करेंगे।

5. काली मिर्च और पुदीना : काली मिर्च और पुदीने की चाय के सेवन से भी आप सिरदर्द से छुटकारा पा सकते हैं। आप चाहें तो काली चाय में कुछ पुदीने के पत्ते और काली मिर्च डालकर पिएं।

शिव - शून्य से शिखर तक

ज्योतिषीय विश्लेषण

- बी. कृष्णा नारायण -

कबीर एक बार अपनी बुनी चादर लेकर काशी के बाजार गए। शाम हो गयी, कोई खरीदार नहीं मिला। वापस लौटते समय एक राहगीर ने पूछा- बाबा यह चादर कितने की? कबीर ने कहा- पता नहीं। तुम्हें चाहिए? राहगीर ने कहा हां। कबीर ने कहा- ले लो। राहगीर फिर पूछा, कितने पैसे? कबीर बोले, पता नहीं। तुम्हें जो देना हो, दे दो। उसने कुछ पैसे निकालकर कबीर को दे दिया और चादर ले ली। राहगीर थोड़ी दूर ही गया होगा कि कबीर ने पीछे से उसे आवाज लगाई- अरे भाई सुनना। राहगीर ने सोचा कि शायद इनके मन में और पैसे लेने की बात आ गयी है। पलटकर उसने पूछा- क्या बात है? कबीर उसके पास गए और कहा - कुछ नहीं, बस इतना कहना चाहता हूं कि इस चादर को बड़ी सावधानी से ओढ़ना। उसने पूछा- क्यों? कबीर ने कहा, क्योंकि मैंने इसके हर रेशे में राम को बुन दिया है...

ठीक इसी प्रकार से हम सब को भी जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के लिए जीवन को बुनना पड़ता है। जीवन के हर रेशे में राम को बुनना पड़ता है। दिलचस्प बात यह कि हर रेशे में राम को बुनने की प्रक्रिया की शुरुआत होती है शिव से, शून्य से। शून्य होना किस प्रकार होगा?

एक उदाहरण से इसे समझें- मान लीजिए, एक बहुत बड़ा गोलाकार झूला है, जो बड़ी तेजी से घूम रहा है। आप उस झूले पर सवार हैं (परिधि पर हैं) तो क्या होगा? आप घूम रहे झूले के अधिकतम गति को महसूस करेंगे। अब यदि आप झूले के केंद्र और परिधि के बीच में आ जाते हैं, अर्थात केंद्र के थोड़े करीब आ जाते हैं, तब क्या होगा? तब यह होगा कि झूले के बड़ी तेजी से घूमने के बावजूद आप अधिकतम गति को नहीं महसूस करेंगे। उसकी तीव्रता में कमी आएगी।

इसी तरह केंद्र के नजदीक आते-आते एक अवस्था ऐसी आएगी, जब आप बिलकुल केंद्र में आ जायेंगे, तब क्या होगा? झूला चाहे कितनी भी गति से घूमे, आप उस गति को महसूस नहीं कर पाएंगे। जहां झूले की परिधि पर आप अधिकतम गति को महसूस कर रहे थे, वहीं केंद्र में आते ही आप शून्य गति को महसूस करने लगते हैं। झूला वही है। उसकी गति वही है, पर आपकी महसूसी में बदलाव आया, ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि आप धीरे-धीरे केंद्र के करीब आते गए। हमारे जीवन में भी बिलकुल ऐसा ही होता है। जीवन में शून्यता की महसूसी के लिए हमें अपने केंद्र में आना होता है। जीवन में शून्यता का भान होने पर ही हमें अपने असीमित क्षमता का दर्शन होगा। यदि हमें अपने असीमित क्षमता के बारे में जानना है तो इसके लिए हमें अपने भीतर की यात्रा आरंभ करनी होगी। अपने केंद्र को जानना होगा। आत्मा को जानना होगा। विज्ञान इसे $v = rw$ से परिभाषित करता है। केंद्र में आकर शून्यता की प्राप्ति होगी। यह तो विज्ञान बता पाता है, परन्तु परिधि से केंद्र तक की यात्रा किस प्रकार हो, यह विज्ञान नहीं बता पाता। यह बता पाना विज्ञान के वश का भी नहीं है, क्योंकि भौतिकता से परे जाकर देखने की शक्ति फिलहाल विज्ञान के पास नहीं है।

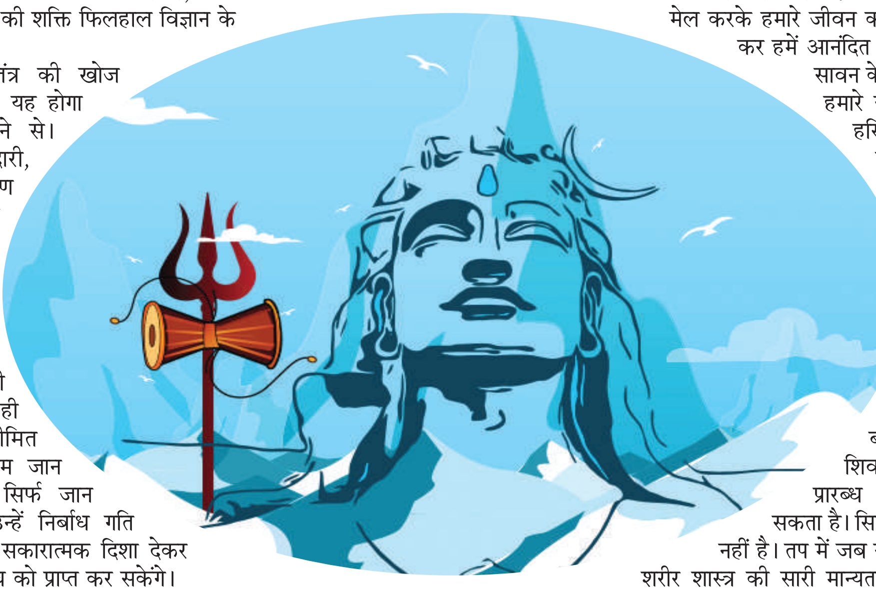

आइये, जीवन-तंत्र की खोज करनी शुरू करें। यह होगा जीवन को बुनने से। सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम और समर्पण से। प्रकृति के साथ एक लय स्थापित करने से, एक रीत में जाने से। तब हमारे भीतर की यात्रा आरंभ होगी और अपने भीतर ही निहित असीमित क्षमताओं को हम जान पाएंगे और न सिर्फ जान पाएंगे, बल्कि उन्हें निर्बाध गति प्रदान करते हुए सकारात्मक दिशा देकर जीवन के सर्वोच्च को प्राप्त कर सकेंगे।

विज्ञान इसे पोटेंशियल एनर्जी को काइनेटिक एनर्जी में परिवर्तित होना कहता है, पर विज्ञान फिर से यह नहीं बता पाता कि यह परिवर्तन होगा कैसे? यह होगा, तमाम तरह के उठने वाले विचारों को मन के स्तर पर ही शिव संकल्प से युक्त कर देने से।

'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु'- हमारा मन शिव संकल्प वाला हो, अर्थात अपने विचारों को परिवर्तित करना, उठ रहे विचारों को मन के स्तर पर ही शिव संकल्प से युक्त कर देना। शुभता प्रदान करना। परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों, अपनी निष्ठा, लगन और सकारात्मक सोच से वहां से भी सर्वश्रेष्ठ हासिल करना। जीवनकाल में हमारे द्वारा हर पल सोची जाने वाली सोच के द्वारा हमारा जीवन निर्मित होता चला जाता है। सुख-दुख का सामान जुटाने वाले हम स्वयं हैं, अन्य कोई नहीं। हम अपनी सोच के द्वारा जिन तरंगों का निर्माण करते हैं, वही तरंगें हमारे सुख और दुःख का चुनाव करने वाली होती है। इस प्रकार कर्म की उत्पत्ति हमारे चिंतन, हमारी सोच का परिणाम भर है। जीवन में सफलता और समृद्धि पाने का सबसे सरल तरीका है अपनी सोच को सकारात्मकता की दिशा में मोड़ना। इसलिए, हर वक़्त हमें समय के गर्भ में सकारात्मक सोच वाली बीज डालनी चाहिए। सकारात्मक सोच से उत्पन्न कर्म हमारी भौतिक उन्नति के साथ-साथ हमारी आध्यात्मिक उन्नति में भी सहायक होते हैं। वह ब्रह्मांड के सकारात्मक ऊर्जा से मेल करके हमारे जीवन को सकारात्मकता से भर कर हमें आनंदित कर देती हैं।

सावन के इस पवित्र माह में जब हमारे जीवन की डोर को श्री हरि ने शिव को सौंपा है, तो क्यों न हम सब शून्य होकर शिव के शरण में चलें। परिधि से केंद्र तक पहुंचने की यात्रा की शुरुआत करें, अपनी सोच को सकारात्मक बनाएं। जीवन को ऊर्जावान बनाएं, गतिशील बनाएं।

शिव कृपा से ही असाध्य प्रारब्ध को साध्य बनाया जा सकता है। सिर्फ पुरुषार्थ से यह संभव नहीं है। तप में जब संकल्प जुड़ जाता है तो शरीर शास्त्र की सारी मान्यताएं झूठी पड़ जाती हैं। शरीर शास्त्र की दृष्टि से अगर देखा जाए तो अन्न, जल, वायु के बगैर शरीर जीवित नहीं रह सकता, लेकिन एक संकल्पित तपस्वी इन सारी मान्यताओं को झुठलाता हुआ ऊर्जा के एक नए आयाम से अपना सम्बन्ध स्थापित करता है। आध्यात्मिक उत्थान का समय है यह। शक्ति के केंद्र से स्वयं को जोड़कर प्रारब्ध को बदलने का समय है यह।

हम उन्नति और प्रगति के पथ पर अग्रसर हों, उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाएं। तमाम विकट परिस्थितियों के मध्य अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त हो।

आइये, अपनी अपनी ऊर्जा को विकसित करें, अपना स्तर और ऊंचा करें। केंद्र तक पहुंचने की यात्रा की शुरूआत करें।

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेंद्रहारम
सदा बसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।

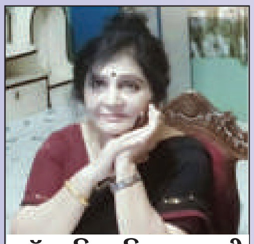

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बंगलुरू, मो.- 8618093357

लघु कहानी

स्टेपनी

रेवा अपने से दस वर्ष छोटी बहन देवा को समझाकर थक गई कि उमेश के प्यार में न पड़। वह उसे टहला रहा है। उसकी तरह उसने कई और महिलाओं को भी फांस रखा है। उसकी नजरों में तू बस एक स्टेपनी है और कुछ नहीं। तेरी दोस्ती क्या है? ऑनलाइन चैटिंग ही तो है। मैं मानती हूं, मां-बाबूजी की गलती से तू शादी की उम्र पार कर गई। तेरे भी तो नखड़े कम न थे। -'यह लड़का स्मार्ट नहीं है, इसकी नौकरी अच्छी नहीं है। बाप रे! इतनी बड़ी फैमली। चाय बांटते-बांटते मर जाऊंगी। ससुराल वालों को इल्म भी नहीं होगा।' यह सब तू ही कहती थी न। घर बसाने के लिए अनेक समझौते करने पड़ते हैं। तब कहीं जाकर परिवार का आनंद मिलता है। वह एक कान से सुनती, दूसरे कान से निकाल देती। उस पर तो इश्क का भूत सवार था। इश्क का नशा, कोकीन के नशे से भी अधिक घातक होता है। जो इसकी चपेट में आ गया, वह दुनिया, समाज की परवाह नहीं करता। देवा का भी वही हाल था। उसे अपनी बड़ी बहन शत्रु नजर आने लगी थी।

देवा अपनी दलीलें देती। -'दीदी! वह मुझसे बारह वर्ष बड़ा है, इसलिए मुझे बहुत प्यार करेगा। जरा सोचो दीदी, चालीस साल की उम्र से वह विधुर जीवन व्यतीत कर रहा है। चाहता तो दूसरी शादी कर लेता। एक नहीं, अनेक रिश्ते आए होंगे। स्मार्ट है, बड़ी कंपनी में काम करता था। पर, उसने अपने बच्चों को प्राथमिकता दी। आज उसके बच्चे विदेश में सेटेल हैं। कंपनी के काम से कई बार विदेश हो आया है। मुझे भी विदेश ले जाएगा। अपनी जाति बिरादरी का भी है। और क्या चाहिए आप लोगों को?'

-'मैं तेरी सब बात मानती हूं, पर याद रख, जिस पुरुष का दिल उछलकर आज यहां, कल वहां लुढ़कता चले, वह कभी विश्वास का पात्र नहीं हो सकता। तेरी आंखें खोलने के लिए मैं कोई उपाय करती हूं। क्यों, मुझसे छीन अपना बनाना चाहती हो क्या?'

-'पहली बात मेरा पति है मेरे पास। दूसरी बात मेरे पति से अच्छा और स्मार्ट दूसरा व्यक्ति नहीं है दुनिया में। बाल-बच्चेदार होकर मैं क्यों छीनने लगी तेरे आशिक को।'

-'अरे दीदी! बाल-बच्चेदार को ज्यादा लभेरिया चढ़ता है। देखी नहीं, चार बच्चों को संग ले, पति को ठेंगा दिखा एक महिला भारत अपने प्रेमी के पास आई है।'

दोनों हंस पड़ीं। रेवा ने अपनी सास कुसुम के नाम एक नया सिम लिया। दक्षिण भारतीय सीरियल की खूबसूरत एक्टर्स की डीपी डाली। चुपके से देवा के फेसबुक से भी जुड़ गई। उमेश को छोड़ सोशल मीडिया पर सभी से जुड़, प्रति दिन कुछ न कुछ एक्ट्रेक्टिव पोस्ट डालने लगी थी। वह दिन भी आया, जब उमेश ने फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजा। इसने स्वीकार कर लिया। फिर तो मैसेंजर पर चैटिंग भी होने लगी। दोनों का मोबाइल नंबर भी आदान-प्रदान हुआ। रेवा वीडियो कॉल कभी रिसीव न करती। हालांकि, उमेश वीडियो कॉल पर बहुत जोर देता। रेवा ने स्वयं को तलाकशुदा बताया था। चैटिंग से ही उसने ताना मारा, -'देवा कौन है? जनाब उसके हर पोस्ट पर शेर-ओ-शायरी लिखते हैं।'

अब देवा हैरान थी। उसके पोस्ट पर उमेश कोई उत्साह न दिखाता। एक सबसे अच्छी तस्वीर पर नाराजगी जाहिर भी कर दी। फिर क्या था, बातचीत भी कम हो गई थी। बस मैसेज द्वारा हाल-चाल तक सिमट गए वे लोग।

मौका देखा, रेवा ने अपनी छोटी बहन के सिर पर हाथ फेरते हुए अपनी ऑनलाइन दोस्ती का सारा राज खोल दिया। देवा हैरान थी। इस खेल में रेवा का साथ देने वाले उसके जीजाजी बोले, -'देवा मेरी साली साहिबा हैं। इसे स्टेपनी बनते मैं कैसे देख सकता था। इसकी शादी तो मैं अपने फुफेरे भाई से कराऊंगा, जो इससे मात्र दो वर्ष बड़ा है। परिवार की जिम्मेदारियां निभाते हुए अभी तक कुंवारा है। बोलिए साली साहिबा, मेरी भभू बनेंगी या ऑनलाइन चैटिंग की...।'

-'जीजाजी, नहीं बनना स्टेपनी।' सभी हंस पड़े।

पेज- एक का शेष

अयोध्या में...

रोज आते ही हैं। उन सभी लोगों के लिए झोला, चप्पल, जूता, पर्स, मोबाइल आदि रखने के लिए एक निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी। उसके बाद ही वे मंदिर में अंदर प्रवेश कर सकेंगे। इतनी बड़ी संख्या में लोग अंदर जाएंगे और बीच में किसी को लघुशंका लगी, तो कहां जाएंगे, इसके लिए उसी परिसर में 300 शौचालयों का एक ब्लॉक बनाया जा रहा है। उसकी गंदगी नगर निगम के नाले में नहीं जाएगी। अंदर ही दो सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट बनाए जा रहे हैं। पानी के शुद्धिकरण का प्लांट भी अंदर होगा। वर्षा जल की एक बूंद नगरपालिका की नाली में नहीं जाएगी। बिजली की लाइन अयोध्या-फैजाबाद की लाइन से नहीं होगी। नहीं तो सब-सिस्टम फेल हो जाएगा। यहां की जनता पर लाइन का लोड न पड़े, इसलिए 50 किलोमीटर दूर पावर हाउस से बिजली ली जाएगी। इस प्रकार मंदिर सभी मामलों में आत्मनिर्भर होगा। रोज दो लाख लीटर पानी की भी वैकल्पिक व्यवस्थी का जा रही है। इतना पानी नगर निगम सप्लाई नहीं कर सकता और जमीन का पानी और नीचे चला जाएगा।

सभी दंत समस्याओं का एक समाधान
डॉ. नरेन्द्र मेमोरियल डेंटल सेंटर
138 को-आपरेटिव कॉलोनी (बोकारो)
दांत एवं मुंह
संबंधी सभी बीमारियों के
इलाज की पूर्ण सुविधा।
समय : सुबह 9.30 से दोपहर 2.30 बजे तक
संध्या 5.00 बजे से रात 9.00 बजे तक
(शनिवार अवकाश)
डा. निकेत चौधरी (संध्या में)

सौर व पवन ऊर्जा मामले में भारत अग्रणी : मोदी

जी20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक में प्रधानमंत्री ने बताईं भावी योजनाएं, 'एक सूर्य, एक पृथ्वी, एक ग्रिड' में शामिल होने का आह्वान

ब्यूरो संवाददाता
नई दिल्ली : 'भारत ने गैर-जीवाश्म स्थापित विद्युत क्षमता के अपने लक्ष्य को निर्धारित समय से नौ साल पहले ही प्राप्त कर लिया है और उसने अपने लिए एक ऊंचा लक्ष्य निर्धारित किया है। देश 2030 तक 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म स्थापित क्षमता हासिल करने की योजना बना रहा है। भारत सौर एवं पवन ऊर्जा के क्षेत्र में भी वैश्विक स्तर पर अग्रणी देशों में से एक है।' ये बातें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहीं। अपने वीडियो संदेश के माध्यम से गोवा में आयोजित जी20 ऊर्जा मंत्रियों की बैठक को वह संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में भाग लेने आए गणमान्य व्यक्तियों का भारत में स्वागत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि ऊर्जा का उल्लेख किए बिना भविष्य, स्थिरता, वृद्धि और विकास के बारे में की जाने वाली कोई भी चर्चा अधूरी ही होगी, क्योंकि यह व्यक्ति और राष्ट्र के विकास को सभी स्तरों पर प्रभावित करती है।

प्रधानमंत्री ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि ऊर्जा क्षेत्र में परिवर्तन के संदर्भ में भले ही हर देश की एक अलग वास्तविकता और उसका एक अलग मार्ग है, लेकिन मेरा यह दृढ़ मत है कि हर देश के लक्ष्य समान हैं। हरित विकास और ऊर्जा क्षेत्र में परिवर्तन के मामले में भारत के प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि भारत सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है और दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन फिर भी वह अपनी जलवायु संबंधी प्रतिबद्धताओं की दिशा में मजबूती से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि कार्यसमूह के प्रतिनिधियों को पावागढ़ सौर पार्क और मोढेरा सौर गांव का दौरा करके स्वच्छ ऊर्जा के प्रति भारत की प्रतिबद्धता के स्तर और पैमाने को देखने का मौका मिला।

190 मिलियन से अधिक परिवार एलपीजी से जुड़े

पिछले नौ वर्षों के दौरान देश की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए प्रधानमंत्री ने बताया कि भारत ने 190 मिलियन से अधिक परिवारों को एलपीजी से जोड़ा। साथ ही, हर गांव को बिजली से जोड़ने की ऐतिहासिक उपलब्धि भी हासिल की। उन्होंने लोगों को पाइप के जरिए रसोई गैस उपलब्ध कराने की दिशा में काम करने का भी जिक्र किया, जिसमें अगले कुछ वर्षों में 90 प्रतिशत से अधिक आबादी को कवर करने की क्षमता है। उन्होंने कहा, 'हमारा प्रयास सभी के लिए समावेशी, सुदृढ़, न्यायसंगत और स्थायी ऊर्जा की दिशा में काम करना है।'

सालाना 45 बिलियन यूनिट से अधिक ऊर्जा की बचत

प्रधानमंत्री ने बताया कि 2015 में भारत ने एलईडी लाइट के उपयोग के लिए एक योजना शुरू करके एक छोटा सा आंदोलन शुरू किया था, जो दुनिया का सबसे बड़ा एलईडी वितरण कार्यक्रम बन गया, जिससे हमें प्रति वर्ष 45 बिलियन यूनिट से अधिक ऊर्जा की बचत हुई। उन्होंने कृषि पंपों में सौर ऊर्जा के प्रयोग से जुड़ी दुनिया की सबसे बड़ी पहल शुरू करने और 2030 तक भारत के इलेक्ट्रिक वाहनों के घरेलू बाजार में 10 मिलियन की वार्षिक बिक्री के अनुमान के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने इस साल 20 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल की आपूर्ति की शुरूआत पर भी प्रकाश डाला, जिसका लक्ष्य 2025 तक पूरे देश को कवर करना है।

भारत में विकार्बनन की प्रक्रिया की चर्चा करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि देश एक विकल्प के रूप में हरित हाइड्रोजन पर मिशन मोड में काम कर रहा है और इसका लक्ष्य भारत को हरित हाइड्रोजन एवं इसके यौगिकों के उत्पादन, उपयोग एवं निर्यात के एक वैश्विक केंद्र में बदलना है।

हरित निवेश से सृजित होंगी लाखों हरित नौकरियां

इस तथ्य का उल्लेख करते हुए कि सारी दुनिया दीर्घकालिक, न्यायसंगत, किफायती, समावेशी और स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में बदलाव को आगे बढ़ाने के लिए जी20 समूह की ओर देख रही है। प्रधानमंत्री ने दक्षिणी दुनिया के देश को साथ लेने और विकासशील देशों के लिए कम लागत वाले वित्त सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने प्रौद्योगिकी संबंधी अंतराल को पाटने, ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ावा देने और आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने की दिशा में काम करने के तरीके खोजने पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने 'भविष्य के लिए ईंधन' के मुद्दे पर सहयोग को मजबूत करने का भी सुझाव दिया और कहा कि 'हाइड्रोजन से संबंधित उच्च-स्तरीय सिद्धांत' सही दिशा में एक कदम है। उन्होंने आगे कहा कि अंतरराष्ट्रीय ग्रिड इंटरकनेक्शन ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ा सकते हैं और भारत अपने पड़ोसियों के साथ इस पारस्परिक लाभकारी सहयोग को बढ़ावा दे रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा, 'परस्पर जुड़े हरित ग्रिड की परिकल्पना को साकार करना परिवर्तनकारी साबित हो सकता है। यह हम सभी को जलवायु संबंधी अपने लक्ष्यों को पूरा करने, हरित निवेश को प्रोत्साहित करने और लाखों हरित नौकरियां सृजित करने में सक्षम बनाएगा।' उन्होंने इस बैठक में भाग लेने वाले सभी देशों को अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की हरित ग्रिड पहल - 'एक सूर्य, एक पृथ्वी, एक ग्रिड' - में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया।

... तो हम बनेंगे जलवायु चैंपियन

प्रधानमंत्री ने इस तथ्य को रेखांकित किया कि परिवेश की देखभाल करना प्राकृतिक या सांस्कृतिक हो सकता है, लेकिन यह भारत का पारंपरिक ज्ञान ही है, जो मिशन लाइफ-पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली-को मजबूत करता है। यह एक ऐसा आंदोलन, जो हम में से हरेक को जलवायु चैंपियन बना देगा। अपने संबोधन का समापन करते हुए प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि हम चाहे कैसे भी बदलाव करें, लेकिन हमारे विचारों एवं कार्यों को हमेशा हमारी 'एक पृथ्वी' को संरक्षित करने, हमारे 'एक परिवार' के हितों की रक्षा करने और हरित 'एक भविष्य' की ओर बढ़ने में मददगार होना चाहिए।

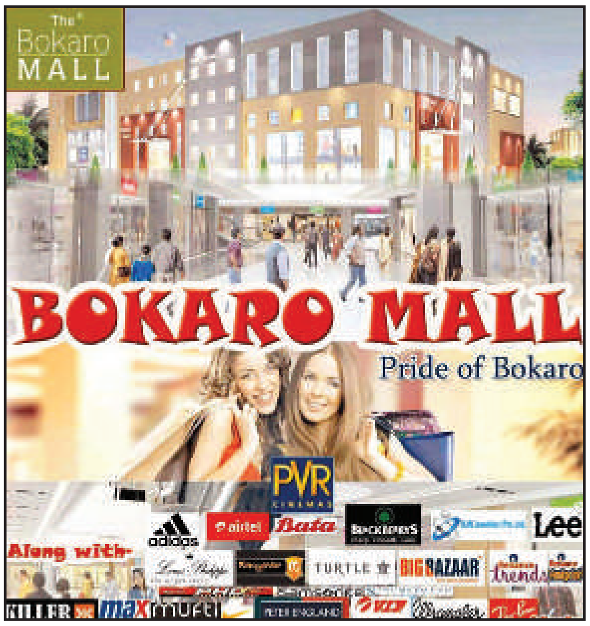

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)